What shall I write (2)?

What shall I write ?
I'm thinking since the evening,
Sitting alone on the terrace, it's 8 at night -
The open sky in front-
Clouds like white cotton are floating by;
I'm sitting alone leaning on the neem tree .
I'm thinking of writing something about this pleasant evening:

Or shall I write
About the frustration of the young man
Who sells vegetables in the van rickshaw?
"Sir, you want veggies?"
"How much is the pointed gourd?"
"Sir, you pay according to your wish
I've lost four hundred rupees early in the morning
What else is left
It's a total loss"
He is going on speaking,
"I wanted to study more after graduating, but,
Father passed away, mother is paralysed on the bed-
Lot's of medicines are needed.
I lost money amidst these;
Pay whatever you wish uncle,
It's okay even if you don't "
What shall I write?

I went out in the locality wearing a mask
For an important work.
That aunt is begging with a polybag in hand,
"Boy, please give me two bucks?"
"Aunty, how many times shall I give you?
You ask everyday!"
"What shall I do son? I get hungry everyday waking up ;
My grandsons shout in the burning hunger
My son also gives slangs
While lying drunk by the door

Tell me what shall I do, son?
Please give me two bucks?”
Trust me I didn’t have my wallet then.
What shall I write ?

On that afternoon for having lunch
While I sat at the dining table,
The calling bell rang-
I went to the balcony and saw
It’s Pintu, the incense stick seller.
He has lost his mother, his father also left-
His one hand has been paralysed since birth.
“Brother, nobody has bought a stick from me
I’m roaming around from the morning
What else will happen?
Even if you buy from me, it won’t give me today’s meal”
What shall I write?

The starry sky is in front of me,
Cotton clouds are floating by,
Shall I write about the smiling full moon
Or about the burnt bread?
I’m thinking for the whole evening,
What shall I write ?

কি লিখব আমি? (২)

কি লিখব আমি?
ভাবছি সন্ধ্যে থেকে.....
ছাদে একলা বসে, মুড়ি আর চা সাথে।
আকাশে মেঘলা আমেজ
সাদা তুলোর মত মেঘ ভেসে যাচ্ছে
নিমগাছের গা ঘেঁষে একলা বসে আমি,
লিখব ভাবছি এই অসময় সন্ধ্যেকে নিয়ে কিছু,
তা কি লিখব —
সকালের ভ্যানরিক্সায় সবজি বিক্রি করতে আসা
যুবকের এক্সপ্রেশান নিয়ে?
"দাদা সবজি নেবেন?"
"– বেগুন কত করে দিচ্ছ ভাই?"
"দাদা, যা ইচ্ছে দাম দিন

কখনো কি হবে? কারো চাঁদ হারিয়ে ফেলেছি,
হয়তোবা সে লোকসান।”
“ফেলেছি বলেই চলেছি....
পৃথিবীর যৌবন অনেক হয়েছিল অনেক বছর কিন্তু
মন আর নেই, আর ফিরবেনায় বন্ধু
অনেক কষ্ট পাচ্ছে,
তাই আমি চাঁদ হারালাম।
যা পেতেন দিন রাত, না দিলেও চলবে....”
কি লিখব আমি?
বিকেলে আজ বড় বাড়ির মোড়ে যাচ্ছিলাম
জরুরি কাজে,
গ্রাম্য পথিক হাতে সেই আমি ভিক্ষা চাইছে –
“এই বেলা কোথা হতে চাঁদ?”

(৬)

সকাল সকাল চাংসো চাঁদ হারিয়ে ফেলেছি,
এবং কি হবে?
"হয়েছে তো লোকসান।"
ফেলেছি বলেই চলেছি....
"প্রয়োজন অং হচ্ছে ছিল এবংও বড়ো কিন্তু
মন আঙা ফেলে, মা বিছানায় বড্ড
অনেক ওষুধ খাচ্ছে,
তাই আজ চাঁদ হারালাম।
মা বলেন দিন কাটবে, না দিলেও চলবে...."
কি নিয়ে আসি?
বিকেলে আজ বড় বাড়ির কাছে এসেছিলাম
জরুরি কাজে,
"প্রাপ্তিক হাতে সেই আমি ভিক্ষা চাইছে -
এই বেলা কেন হলো চাঁদ?"

(1)

“
আমি তোমাকে কখনো দেখেছি?
রোজই তো চাইছ তুমি?”
“
কি করব বল, ঘুম ভাঙলে রোজই তো ছিঁড়ে যায়;
শাড়ি নাইটিগুলো ছিঁড়েও কেউ ছিঁড়েও ছায়ায়,
অনেক ঘোরে দরজায় বড়ো আলো
আমাও বেলেটাও খালি গেল!
কি করি বলতো বল?
দিলে দুটো টাকা?”
বিশ্বাস করুন আমি বিশ্বাস ছিল না সেদিন আমাও বলেছে!
কি লিখব আমি?
সেদিন দুপুরে লাঞ্চ করব বলে
ডাইনিং টেবিলে বসে বসেছি
কলিং বেলটা বাজলো,

(৬)

বারান্দায় গিয়ে দেখি
সেই ছবিআঁকিয়ে ওয়ালা নিখুঁত,
মা ওকে ছেড়ে চলে গেছে, বাবা নেই
একটা হাত কিছু খেয়েই দ্যাংলামি সঙ্গে,
"দাদা, কেউ ছবিআঁকিয়ে নেয় নি
সকাল থেকে খুঁজছি,
আর কি হবে?
তুমি ছবিআঁকিয়ে নিলেও আমাদের বয়স হবে না আজ।"
কি লিখব আমি?
সামনে অনেক দূর আকাশ
সাদা তুলোর মতো মেঘ ভেসে যাচ্ছে
তুমি আর হাসি হাসি চাঁদ নিয়ে লিখব
নাকি ঝলমলে রুটি নিয়ে?
কি লিখব আমি ভেবেছি সন্ধ্যে থেকে...।

क्या लिखूं मैं ?(2)

शाम से यही सोचता हूँ.......

अकेले छत पे बैठे बैठे,रात के आठ बज रहे हैं।

सामने खुला आसमान,

बादल तैरते जाते हैं सफ़ेद रुई की तरह,

नीम के पेड़ के साथ लगे हुए अकेला बैठा मैं,

सोच रहा हूँ,

इस सुनहरी सांझ को लेकर कुछ लिखूं,

या,

सुबह वैनरिक्शे में सब्जी बेचने आनेवाले

उस नौजवान के फ्रस्ट्रेशन को लेकर लिखूं

“भाईसाहब,सब्जी लेंगे ?”

“परवल कितने का दोगे भाई ?”

“भाईसाहब,जो मर्जी,वही कीमत दीजिए ,

सुबह सुबह चारसौ रूपए गुम हो गए हैं,

और क्या होगा ?

पूरा ही नुकसान हुआ”

लड़का बोलता ही जा रहा था ,

“ग्रेजुएशन के बाद और पढ़ने का मन था,पर

पिताजी का देहांत हो गया,माँ बिस्तर में अपाहिज पड़ी है,

बहुत सारी दवाओं की जरुरत हैं !

इन सबके बीच रूपए खो दिए मैंने,

जो देना है,दीजिए चाचा,नहीं देंगे,फिर भी चलेगा। ....”

क्या लिखूं मैं ?

शाम को मास्क पहनकर मैं ,

कुछ जरुरी काम से, मोहल्ले के मोड़ से होते हुए जा रहा था

वही मौसी हाथों में प्लास्टिक लिए भीख मांग रही है।

“ऐे बेटे! कुछ पैसे दो न !”

“मौसी,आपको कितनी बार दूँ ?

रोज़ ही तो मांगती हो”,

“क्या करूँ बेटा,आँखें खुलते ही रोज़ ही तो भूख लगती है

पोते-पोती चीखते हैं भूख से पीड़ित ,

दारू के नशे में चूर दरवाज़े के पास पड़ा

मेरा बेटा भी गाली देता है

क्या करूँ बेटा,तुम ही बता दो !

दे दो न कुछ पैसे”

यकीन मानिए,मेरे पास उसदिन जेब में मनीबैग नहीं था

क्या लिखूं मैं ?

उसदिन दोपहर को जैसे ही मैं डाइनिंग टेबल पर

लंच करने बैठा,

कॉलिंग बेल बजने लगा,

बरामदे में जाकर देखा

वही अगरबत्तीवाला पिंटू

माँ छोड़कर चली गयी है,पापा नहीं हैं

जन्म से ही एक हाथ पैरालाइज़्ड

“भाईसाहब,कोई अगरबत्ती नहीं लिया

सुबह से घूम रहा हूँ ,

और क्या होगा ?

तुम अगर अगरबत्ती लोगे,तब भी खाने के पैसे नहीं होंगे”

क्या लिखूं मैं ?

सामने तारों से भरा आसमान,

सफ़ेद रुई की तरह, बादल तैरते जा रहे हैं।
पूनम के मुस्कुराते चाँद को लेकर लिखूं ,
या झुलसते रोटियों को लेकर लिखूं।
शाम से यही सोच रहा हूँ ,
कि क्या लिखूं मैं ?